शहादत चौथे इमाम जैनुल आब्दीं (अलै.)

(25 मुहर्रम)

उठा पच्चीस्वी माहे अज़ा को आह बह आक़ा
के जैनुल आब्दीं जिसने था दुनिया में लक़ब पाया

थी व पच्चानवे हिजरी हुआ था जब हशर यह बरपा
हुशाम इब्ने मलिक के ज़हर से मारे गए आक़ा

चबाया सूरते अशदर अंगूठा गो के शैताँ ने
मगर मसरूफ जब भी ताअते हक़ में रहे आक़ा

कुएँ में गिर पड़े बाक़िर न फ़र्क आया इबादत में
जुबां से उफ न की आदा ने गो बेहद सितम ढाया

बने जिनसे के मस होकर जवाहर आब के क़तरे
उन्हीं हाथों में हथकड़ियाँ पिनहायँ हैफ है आदा

किया था संगे असवद नस्ब हज़रत ही ने काबे में
लईनों ने मगर फिर भी इमामे वक़्त कब माना

था शमबे का तो दिन ऐ 'फिक्र' और - पनजुम थी शाबाँ की
वह सन् तेईस हिजरी था हुए थे आप जब पैदा